

समाचार वाणी

खबर जो करें असर !

नाशिक | Tuesday, 20 October 2026

सौ. सिद्धि देशमुख पाटिल : महत्वाकांक्षा से नेतृत्व तक, शिक्षा के क्षेत्र में बनाई नई पहचान

Sanket Morankar

Published on 19 Oct 2026



बचपन के सपने को नेतृत्व की जिम्मेदारी में बदला

बचपन से ही मुख्य कार्यकारी अधिकारी (CEO) बनने का सपना देखने वाली सौ. सिद्धि देशमुख पाटिल ने शिक्षा, विभिन्न क्षेत्रों के पेशेवर अनुभव और नेतृत्व कौशल के आधार पर अपनी पहचान बनाई है। जून 2026 में उन्हें 'Yoddhaa Defence Institute' और 'Yoddhaa School' के CEO पद की जिम्मेदारी सौंपी गई। इस भूमिका के माध्यम से उन्हें संस्थानों के विकास के साथ विद्यार्थियों की शैक्षणिक प्रगति और सर्वांगीण व्यक्तित्व निर्माण को दिशा देने का अवसर मिला है।

सौ. सिद्धि की यात्रा महत्वाकांक्षा को स्पष्ट लक्ष्य में बदलने और उस लक्ष्य की ओर लगातार आगे बढ़ने की कहानी है। उनके लिए नेतृत्व का अर्थ केवल संस्थान का प्रबंधन करना नहीं, बल्कि ऐसी व्यवस्था विकसित करना भी है, जो विद्यार्थियों को ज्ञान, अनुशासन, आत्मविश्वास और जिम्मेदारी के साथ भविष्य की चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करे।

शिक्षा और गोल्ड मेडल से मजबूत हुई नींव

सौ. सिद्धि देशमुख पाटिल ने बीबीए की पढ़ाई फाइनेंस और एंटरप्रेन्योरशिप में विशेषज्ञता के साथ पूरी की। इसके बाद उन्होंने मार्केटिंग और बिजनेस एनालिटिक्स में दोहरी विशेषज्ञता के साथ एमबीए किया और गोल्ड मेडल हासिल किया।

पढ़ाई के दौरान ही उन्होंने चार कंपनियों में इंटरनशिप का अनुभव प्राप्त किया। इससे उन्हें अलग-अलग व्यावसायिक कार्यप्रणालियों को समझने और वास्तविक कार्यस्थल पर अपने ज्ञान का उपयोग करने का अवसर मिला।

फाइनेंस, उद्यमिता, मार्केटिंग और बिजनेस एनालिटिक्स जैसे विषय किसी भी संस्थान के संचालन और विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इन क्षेत्रों में प्राप्त शिक्षा ने सिद्धि को व्यावसायिक रणनीति, योजना निर्माण और निर्णय लेने की प्रक्रियाओं को समझने के लिए आधार प्रदान किया।

उनकी शैक्षणिक यात्रा यह भी दिखाती है कि अकादमिक उपलब्धियों के साथ व्यावहारिक अनुभव का संयोजन पेशेवर विकास में

उपयोगी साबित हो सकता है।

विभिन्न क्षेत्रों के अनुभव से विकसित हुआ नेतृत्व दृष्टिकोण

सौ.सिद्धि के पेशेवर सफर में Mercedes-Benz India, सेमीकंडक्टर तकनीक के क्षेत्र में कार्यरत Vasbeam और भारतीय नौसेना से संबंधित पेशेवर अनुभवों का उल्लेख है। अलग-अलग क्षेत्रों में काम करने से उन्हें प्रबंधन, तकनीक, योजना निर्माण और संस्थागत कार्यप्रणाली के विभिन्न पहलुओं को समझने का अवसर मिला।

विभिन्न उद्योगों का अनुभव किसी भी नेतृत्वकर्ता को समस्याओं को अलग-अलग दृष्टिकोण से देखने और परिस्थितियों के अनुसार निर्णय लेने की समझ विकसित करने में मदद कर सकता है। सिद्धि अपने इस अनुभव को शिक्षा क्षेत्र में संस्थागत विकास और कार्यक्षमता बेहतर बनाने के लिए उपयोग करना चाहती हैं।

शिक्षा क्षेत्र में काम करने की प्रेरणा उन्हें अपनी मां के प्रीस्कूल व्यवसाय से मिली। वहीं, उनके पिता के कॉर्पोरेट नेतृत्व ने उनके पेशेवर दृष्टिकोण को प्रभावित किया। परिवार से मिली प्रेरणा और अपने अनुभवों के मेल ने शिक्षा के क्षेत्र में उनकी रुचि को आगे बढ़ाने में भूमिका निभाई।

‘Yoddhaa’ की जिम्मेदारी और संस्थागत विकास का लक्ष्य

‘Yoddhaa Group of Institutes’ के संस्थापक, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक सेवानिवृत्त लेफ्टिनेंट कर्नल रणजीतसिंह नलावडे ने सिद्धि पर विश्वास जताते हुए उन्हें CEO की जिम्मेदारी सौंपी। सिद्धि इस अवसर के लिए उनके मार्गदर्शन और समर्थन के प्रति आभार व्यक्त करती हैं।

अपनी नई भूमिका में वे महाराष्ट्र में संस्थान के संचालन, संस्थागत विकास, मार्केटिंग, व्यवसाय विस्तार और कार्यक्षमता में सुधार जैसे क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित कर रही हैं।

शैक्षणिक संस्थान का विकास केवल विद्यार्थियों की संख्या बढ़ाने तक सीमित नहीं होता। इसमें शिक्षण की गुणवत्ता, प्रशासनिक प्रक्रियाएं, शिक्षकों का सहयोग, विद्यार्थियों के लिए उपयुक्त वातावरण और दीर्घकालीन रणनीति भी महत्वपूर्ण हैं। सिद्धि की भूमिका इन विभिन्न पहलुओं को एक साझा उद्देश्य के साथ आगे बढ़ाने से जुड़ी है।

‘Scholar–Warrior’ सोच और विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास

‘Yoddhaa’ की कार्यप्रणाली में ‘Scholar–Warrior’ की अवधारणा को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों में ज्ञान प्राप्त करने की क्षमता के साथ अनुशासन, शारीरिक तैयारी, भावनात्मक संतुलन और चुनौतियों का सामना करने का आत्मविश्वास विकसित करना है।

संस्थान के ‘Yoddhaa Pattern’ में विद्यार्थियों के विकास के तीन पहलुओं पर जोर दिया जाता है:

- **IQ — बौद्धिक क्षमता :** ज्ञान, तार्किक सोच, समस्या समाधान और सीखने की क्षमता का विकास।
- **EQ — भावनात्मक क्षमता :** भावनाओं को समझना, आत्मनियंत्रण, सहानुभूति और दूसरों के साथ प्रभावी संवाद करना।
- **PQ — शारीरिक क्षमता :** शारीरिक सक्रियता, फिटनेस, अनुशासन और शारीरिक तैयारी पर ध्यान देना।

इस दृष्टिकोण के अनुसार, विद्यार्थियों की तैयारी केवल परीक्षाओं में अच्छे परिणाम प्राप्त करने तक सीमित नहीं रहनी चाहिए। उन्हें जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में आने वाली चुनौतियों का सामना करने, जिम्मेदारी निभाने और परिस्थितियों के अनुसार खुद को ढालने के लिए भी तैयार होना चाहिए।

सौ. सिद्धि के नेतृत्व में इस सोच को संस्थान के विकास के साथ जोड़ना एक महत्वपूर्ण प्राथमिकता है। हालांकि, इस मॉडल के वास्तविक परिणामों का आकलन करने के लिए विद्यार्थियों की प्रगति, कार्यक्रमों और उपलब्धियों से संबंधित प्रमाणित जानकारी उपयोगी होगी।

बालिकाओं के सशक्तिकरण के लिए विशेष दृष्टिकोण

सौ.सिद्धि देशमुख पाटिल चाहती हैं कि लड़कियां पारंपरिक अपेक्षाओं तक सीमित न रहें, बल्कि अपनी क्षमताओं के अनुरूप लक्ष्य

निर्धारित करें और नेतृत्व की जिम्मेदारियां स्वीकार करें। वे बालिकाओं को सशस्त्र बलों सहित विभिन्न क्षेत्रों में करियर की संभावनाओं पर विचार करने के लिए प्रोत्साहित करने के पक्ष में हैं।

उनके दृष्टिकोण में आत्मविश्वास और अवसर महत्वपूर्ण हैं। जब लड़कियों को अपनी क्षमता पहचानने, कौशल विकसित करने और अपने फैसले लेने का अवसर मिलता है, तो वे शिक्षा और करियर में अपनी आकांक्षाओं को आगे बढ़ा सकती हैं।

शिक्षा संस्थानों की भी इसमें महत्वपूर्ण भूमिका है। विद्यार्थियों को केवल पाठ्यक्रम तक सीमित रखने के बजाय उन्हें नेतृत्व, संवाद, टीमवर्क और आत्मनिर्भरता से जुड़े अवसर उपलब्ध कराना उनके समग्र विकास में योगदान दे सकता है।

महत्वाकांक्षा को सामाजिक उद्देश्य से जोड़ने की पहल

सौ. सिद्धि देशमुख पाटिल की यात्रा शिक्षा, प्रबंधन और नेतृत्व के मेल को सामने लाती है। मजबूत शैक्षणिक पृष्ठभूमि, विभिन्न क्षेत्रों का अनुभव और संस्थागत जिम्मेदारी के माध्यम से वे अपने बचपन के सपने को व्यापक उद्देश्य से जोड़ने की दिशा में आगे बढ़ रही हैं।

उनका लक्ष्य संस्थानों के विकास के साथ विद्यार्थियों में ज्ञान, भावनात्मक परिपक्वता, शारीरिक तैयारी, अनुशासन और समाज के प्रति योगदान की भावना को प्रोत्साहित करना है।

उनकी कहानी नई पीढ़ी के उन युवाओं के लिए प्रेरणा बन सकती है, जो अपने करियर में नेतृत्व की भूमिका निभाना चाहते हैं। यह यात्रा बताती है कि महत्वाकांक्षा को शिक्षा, व्यावहारिक अनुभव और स्पष्ट उद्देश्य का साथ मिले, तो वह व्यक्तिगत उपलब्धि से आगे बढ़कर दूसरों के विकास में योगदान देने का माध्यम भी बन सकती है।

DISCLAIMER: the views/contents expressed/presented herein, within this advertorial and promotional feature are the sole and exclusive responsibility of individual clients/expert/their authorised representative/Sanket Morankar, to which effect, publication house/its representative/affiliates are not responsible/liable whatsoever.